

॥ सकारादि श्रीसीतासहस्रनाम-स्तोलाम्

[श्रीरुद्रयामल--तन्त्रोक्तम्]

सुरालये प्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम् । शैलाधिपस्यतनया सङ्गे हरमुवाच ह ॥१॥ भी देव्युवाच

परमेश परंधाम-प्रधानपुरुषेश्वर । नाम्नां सहस्त्रं सीतायाः विस्तरात् वद शङ्कर ! ॥२॥

श्री महादेव उवाचः—
श्रिता देवि प्रवच्यामि नाममध्येसहस्रकम् । परंघामप्रदाविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा ॥३॥
गुद्धात्गुद्धतमां देवि ! सर्वसिद्धयेकवन्दिता । श्रितगुद्धतराविद्या सर्वतन्त्रेषु वेदिता ॥४॥
विशेषतः किलयुगे महासिद्धयौघदायिनी । गोपनीया प्रयत्नेन कस्मैचिन्नप्रकाशयेत् ॥४॥
विनाध्यानं-विनाप्जा-विनाहोमं-विनाजपम् । विनापुष्पं—विनागन्धं विनादानं विनामखम् ॥६॥
सङ्गुच्चिरिताविद्या ब्रह्महत्यां व्यापोहिति । एतद्धिज्ञानमात्रेग् सर्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥७॥
श्रप्रकाशयमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुत्रते । रोधिनीविष्टनसंघानां मोहिनोपरयोपिताम् ॥६॥
स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम् । कलौ पापसमाकीर्गे पठनान्मुक्तिकिल्विषां ॥६॥
तस्मान्त्वं पठ देवेशि ! स्वर्गमोन्तप्रदायकम् । न्यासिवद्यां प्रवच्यामि श्रुग्ण पर्वतनन्दिनी ॥१०॥

देव लोक में सर्व श्रेष्ठ कैलाश में देव देव महादेव शक्करजी से श्री पार्वं की जी ने प्रेम पूर्वंक पूछा-हे प्रधान पुरुषों में सर्वोत्तम प्रभो ! आज तो आप श्री सीता जी के सहस्रनाम विस्तार पूर्वंक सुनाने की छपा करें। श्री महादेव जी ने कहा:—

हे देवि ! श्री जानकी जी के अनन्तानन्त नामों में से केवल एक हजार नाम मैं धाज मुनाता हूं। यह अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष देने वाली परा विद्या है, यह प्रभु का परम धाम भी प्रदान करती हैं। गुष्त से भी महागुष्त सर्व सिद्धियों से बन्दनीय अत्यन्त गोपनीय तन्त्रों द्वारा ज्ञात होने वाली महा विद्या है। विश्लेष कर किलकाल में सम्पूर्ण महा सिद्धियों को प्रदान करने वाली है। अतः जिस किसी को नहीं कहनी चाहिये। गुष्त ही रखनी चाहिये। विना ध्वान के-विना पूजा के-दिना होम के-बिना जप के-विना पुष्प चन्दन के तथा विना यज्ञ के वान हिला के केवल एक बार अद्धा विश्वास से पाठ करने मात्र से ही ब्रह्म हत्यादिक महान पापों से छुटकारा दे देती है। इसके जानने से ही मनुष्य सर्व सिद्धियों का सम्राट् बन जाता है। अतः अपने गुष्त अन्न की भांति हे सुन्दर मुख बाली पावंती ! इसको छिपा कर ही रखनी

बाहिये। वह सभी विष्नों को रोकने वाली है, स्त्रियों को मोहित करने वाली है, राजा की सेनाओं का स्तंभन करने वाली है तथा विवाद में प्रतिवादी को परास्त करने वाली है। पापों से भरे हुए कलियुग में पाठ करने मात्र से पायन करने वाली है। अतप्य हे देवि! स्वगं तथा मोच फल प्रदायक इस भी सीतासहस्रनाम का पाठ तुम अवश्य करो। हे पार्वित! इसकी स्वास विधि का मैं वर्णन करता हूं सो तुम मुनों (श्लोक १ से १०)

श्रस्यसहस्रनामस्य ऋषित्रं स्ना प्रकीर्तितः । छन्दोऽनुष्टुप् प्रोक्तश्र सीतादेवी प्रकीर्तिता ॥११॥ सीरमं बीजमाख्यातं कमलाशक्तिरीरिता । कीलकं पाशवीजेन विनियोगस्ततः परम् ॥१२॥ श्रयध्यानं प्रवच्यामि सीतायाः परमाद्भुतम् । सर्वपापहरं दिन्यं सर्वकामफलप्रदम् ॥१३॥ श्रायुः कीर्तिकरंपुगयं सर्वाचौघ विनाशनम् । ज्ञात्वा सम्यक् विधानेन न्यासजालंसमाचरेत्॥१४॥

अस्य श्रीसीतासहस्रनाममन्त्रस्य ब्रह्मात्रृषिः श्रनुष्टुप् छन्दः श्रीसीतादेवतायैनमः! ह्रीं ह्रीं क्ली बीजाय नमः श्रींशक्तये नमः श्रां कीलकाय नमः ममसकलाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । श्रथध्यानम्—

इस श्री सीतासहस्रनाम के बहा। ऋषि है, अनुष्टुप् छन्द है। श्री सीता देवता है, हूँ— हूँ-क्जी बीज हैं, कमला शक्ति है. अं कीलक है अभीष्ट मनोरथ की पूर्ति तथा श्रीसीताजी की कृपा श्राप्ति इसका विनियोग है। इसी से ऋष्यादि न्यास करके 'श्रीसीताये स्वाहा'' इस मूल मन्त्र से अङ्गन्यास-करन्यासादिक करना चाहिये। अब इम श्रीसीताजी का परम अद्भुत सबं पाप नाराक-आयु-कीति तथा पुण्य प्रधंक-सबं विष्न विनाशक-भक्त की सभी कामनायें पूण करने बाला ध्यान बर्णन करते हैं (हलोक ११ से १४)

ध्यायेज्जानकी रम्यां मुक्ताहारसुशोभिताम् । श्रनन्तरत्नराचेतां तिहासन विराजिताम् ॥१५॥
टयत्यर्थसहस्राभां दाडिमीकुसुमप्रभाम् । सुवृत्तनिविडोत्तुङ्ग कुचमगडलराजिताम् ॥१६॥
धनर्घ्यं मौक्तिकस्फार हारभारविराजिताम् । नवरत्नप्रभाराजि प्रवेयवर भूषणाम् ॥१७॥
श्रुतिभूषामनोरम्यां सुगगडस्थल भूषणात् । नमामि परमां देशीं रामवामाङ्कगां शिवाम् ॥१८॥

मुकाहार से मुशोभित, अनन्त रत्नों से जड़े हुए सिंहासन पर विराजमान-उदय होने शंते हजारों स्वों के समान प्रकाशित-अनार के फूल के समान अक्ण प्रभा वाली-सुन्दर वज्ञ स्वत्न से मुशोभित-वहुमृत्य मिण मुक्ताप्रों के हार धारण किये हुए-नत्र रत्नों की प्रभा से अमकता हुआ करठ भूवण गले में पहने हुए-मनोहर कर्णकृत कान में शोभता है ऐसी परम कन्वाण स्वव्या श्रीराम के बाम भाग में विराजमान भी जानकी जी का ध्यान करके में अलाम करता हूं। इस प्रकार का ध्यान कर हत्य में ही मानसिक पूजा के उत्थारों से उनके भी बरणों का पूजन करके अक्तजन इस स्तोत्र का पाठ करें। तत्थरवात एलोक १८३ तक क्यून वाठ करके तब फलश्र्ता पढ़ें। स्तोक १५ से १८)

इति ध्यात्वा हुयु पचारैस्सम्पूज्य स्तोत्रकं पठेत् । ॐसीता सीमन्तिनी सीमा सन्मन्त्रफल दान्छ सत्या सत्यवती सामा सान्विकी सर्वमङ्गला । सत्त्रभावा सतीसाध्वी सत्कला सक्लेश्टा संमस्ता समदा सान्द्रा सान्द्रनीलसमप्रभा । सौभाग्यजननी सेव्या सीम्या सुन्दरक्षिणी संभ्रमातीता सन्तुष्टफलदायिनी । सर्वोत्तुङ्गकला सर्वा सर्वेष्टा सङ्गमीयया शान्तित्रिया शान्तिमती सोमन्तमिण्भूपणा। सावित्री सन्मुखी सिद्धा शारदा च समत्रमा स्वतन्त्रा सत्यसङ्कल्पा समदृष्टिफलप्रदा । सारङ्गसदृदशा श्यामा सरसा शशिशेखरा समाना सामगा शुद्धा समस्तसुर सम्मुखी। सर्वसम्पत्प्रदात्री च शमदा सिन्धुसेविनी सरसीरुह मध्यस्था सरोवर विहारिणी । सरस्वती सुविधाओ श्रीजया शुभदायिनी सर्वमाङ्गल्यजननी सार्वभौम प्रदायिनी । सामाज्यकारिग्री साम्राज्यकलदायिनी । सत्यत्रता सत्यपरा सद्भावा सत्यरायणा । सन्मार्गकर्त्री सम्मान्या सम्मानसुखदायिनी सत्यज्ञानप्रदात्री च सुमनाराध्यपादुका । स्वर्णकान्ति समप्रख्या स्वर्णाभरण भूपिता सत्सङ्करपत्रदा सज्या सुखी सौख्यवरत्रदा । संसारसागरारूढ संसारभय नाशिनी सर्वार्थसाधिनी सर्वा शर्वाक्षी शङ्कर प्रिया । शाश्वतस्थानफलदा शासना शासनप्रिया सारस्यत फलप्रदा । विजानमण्रिमञ्जीरा सस्मिताऽधरपरुलवा। सर्वसौन्दर्यनिलया सर्वसौभाग्यशालिनी । सज्जनानन्द निलया सत्कर्म फलदायिनी ॥ ख्दमा ख्दमगतिस्स्तुत्या ख्दमज्ञानप्रदायिनी । सौदामिनी सुधादेवी सिन्धुरूपा च साम्विका ॥ सिद्धिप्रदा सिद्धिवन्धु सिद्धेशी सिद्धसुन्दरी। सन्ध्येयत्री सन्ध्यजरा सन्ध्या तारुग्यलालिता। शमदा शाङ्करी सेतु सुकोला सरतीरुहा । सोमेश्वरी सोमकला सोमपान सुतम्मता। सीम्यानना सीम्यरूपा सोमस्या सामसुन्दरी । स्प्रमा स्प्रमुखी स्ट्रांजा स्ट्रिसुन्दरी स्टर्वकोटि प्रतीकाशा स्वीतजोमयी सती। सोमकौटि प्रभा शोभा साममग्डलवासिनी। शतानन्दा श्रुतिधरा सुषुम्ना शोमनिषया । शोभावती सुशोभाढ्या शोभना सुभगा सुवा शताची शम्बरध्वंसी सहस्राकी सहोदरी । सहस्रशीर्पा सर्वेशी सहस्रपदसंयुवा सहस्राची सुत्रस्त्राह्या सहस्र ग्रजवितका । शुभवस्त्रिया सुन्दा शत्रुष्टनीशंतनुष्रिया च शत्ररी सहस्रवद्वजा । शिशुपावृत्तनिलया शम्बरारि सुखब्दा श्रान्तिहा सन्तितः सत्या सन्तानफलदायिनी । श्रींकाररूपिणी श्रद्धा श्रेयदा श्रमनाशिनी श्रष्टा श्रेष्टकरी श्रेया श्रुतिरूपा श्रुतित्रिया। श्रेशिपति समाराध्या सुद्धगान त्रिव्हरी

म्यागापरिन स्थितिकरा स्थितिस्था स्थितिवर्द्धिनी । अद्भावती च अमदा अद्भा मक्तिसमन्विता ॥ ब्रोविद्या पोडशी पोडा पोडान्यासफलपदा । शुक्लाम्बरपरीधाना शुक्लगन्धानुलेपना ॥ शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शुक्लाभरणभूषिता । स्वयंज्योतिः स्वयंकर्त्री स्वयमानन्द्विप्रहा ॥ श्वेषादिशाधिनी शेषा श्रीधराचितपादुका । संकर्षण्यिया सभ्या समामगडलवासिनी ॥ सर्वेन्द्रिया-सर्वेगतिः-सर्वसाची-समुन्नता । संग्रामकारिगी-शैवा-सरयूतीरवासिनी ॥ सर्बाह्मण कुलोत्पन्ना-सिच्चिवानन्दरूपिण्यो । सुगमा-सुगमप्रीता-सुगमध्यानतत्परा ॥ सोमपानरता-सोमा-शाम्भवी-शम्भवल्लभा । समया-समयाबारा-संविज्ञानपरायला ॥ सनातनित्रया-शूरा-शूरश्रेणीविराजिता । श्रुतिस्पृतिप्रदात्रीच-श्रवणी-श्रावणिप्रया ॥ शतपत्रप्रिया-स्टीरा-सामन्तकुसुमार्चिता । सुबोधा-सुमतिः स्वेच्छा-सुरेशवरदायिती ॥ सङ्गीतगानरसिका - सदास्वरविराजिता । सरिगमज्ञानफलदा - सदासन्तोपकारिग्गी ॥ सामवेदक्रतोत्सङ्गा-सामगानिप्रयङ्करो । श्रीबैध्यावसमाराध्या - स्वेचछाविभवदायिनी ।। स्बन्छन्दानारतिलया—स्वेष्टा-स्वेष्टफलप्रदा । स्वन्छन्दा-सानुरूपस्था-साम्याधिकवरप्रदा ॥ शाकम्भरी-शिवाराच्या-सिहाचलनिवासिनी / शिवङ्क ते-शिवाङ्करथाःशिवञ्यात रराय्गानाः मन्पादनित्रयो सम्या-सम्पूर्ण्कलदायिनी । शंखात्राशिनी शङ्खस्यना-शङ्खगलाशशी ॥ शङ्खिनो-शङ्ख्वलया-शङ्ख्यमालावतो-समो । शम्बरी शाम्बरी-शम्बू-शम्बुकी-शबराशिनी ॥ शङ्घी शङ्ख्यवती शङ्खा-श्यामाङ्गी-श्यामलोचना ।श्मशानस्था-श्मशाना च श्मसानस्थल भूषणा॥ शिवदाऽशिवहन्त्री च शकुनी-शङ्कशेखरा । सुमुखी-शोषिगी-शोषी-सौरी सौर्या सरासरी ॥ शंपहा-शापहा-शम्पा सम्पत्-सम्पत्तिदायिनी । शृंगिग्ी-शृङ्गीफनभुक् शान्तिनी-शङ्करिया। शंका-शंकापहामंस्था-शाश्वता शीतला-शिवा। शिवस्था-शिवभुक् शाली-शिवाकरा शिवोदरी।। शाबिनी-शयनी-शिसा-शिगुपः-शिगुपाबिनी । शुवकुण्डलिनी-श्वेता-शीकरी-शशिल चना ॥ शिवकाश्ची-शिवश्चीका-शिवमाला-शिवाकृति । सम्पातिः संकुवसितः शन्तेनुः शीलदायिनी ।। सिन्धुः स्वरगितः सेंध्री सुन्दरी सुन्दरानना । साधुः सिद्धा मिद्धिदात्री सिद्धासिद्धस्वरूपिणी ॥ सरः समा समाना च समाराध्या समस्त्वा । समृद्धा समदा सहना सम्मोहा रूपश्यांना ।। सिनितः सिमया स्तेहा सुधारस सम्रिवता । समीरा संतता सप्ता साध्वी सा असह विनी ॥ गाइलो संकृतिः शाद्या सम्प्रदायप्रसादिनी । सुवना सुमनाचारा समाना सामसी गुभा ।। श्रीमता श्रीमती श्रीमा श्रीता श्रीत्यवासिनी । सालंकता शालुवेशी शालुवेश त्रिवङ्करीं।।

मुलभाराध्या मुश्रावा सुष्ठुमल्लिका। सुलभा शुचिज्ञा सुमना शुद्धा शुचिध्यान समाश्रिता ॥७१॥ शूचिनी सूचनप्रिया। शुचिकमंपरा शुत्री सुज्ञाननिलया सुज्ञा सुबुद्धि सन्निवेशना ॥७२॥ स्पर्शा शिवमौलिकृताश्रया । संस्कालगामिनी स्तुत्यर्था सर्ववोषहती सम्पक्वफलवायिनी ॥७३॥ संसर्गा संस्पृणा स्तुत्या स्तोकस्तोत्र प्रियङ्कः री। सवया सर्ववास्तुन्ना सधिया सर्व देवता ॥७४॥ सुण्डरता सुवरा समनार्चिता। सुरालया सद्वोधनिरता सस्या सन्यपाणिः सुरद्युतिः ॥७५॥ सांख्यायनमुनिस्तुत्या सांख्यासाहित्यवायिनी । शाल्मली कुसुमप्रख्या शोंडीमेमार्जनीकर ॥७६॥ स्कन्वपुत्रो स्कन्बमाता स्कन्बा स्कन्बवरप्रवा। स्फुटार्थफलवा स्फोटा स्फुटवक्त्रा स्फुटित्रया ॥७७॥ संसारपंकनिर्मग्नसमुद्धरण्पण्डिता । सानिध्यवायिनी सन्धिः सुवशा सुमनोहरा ॥७८॥ सम्यक्समुच्तरी सस्या स्वर्भानुःफलवायिनी । शसका संस्मिता सस्मा सुमेरू शुविभूवण ॥७९॥ शुचिस्मिता सूनेत्राच सुकोमला सुलक्षगा। युण्डिप्रया युण्डमाता युण्डावण्ड विराजित ॥ द०॥ सञ्चिता सञ्चरी सेवा सत्या भूषालसेविता। सुमेखला गुगुप्ता च सुगिरा च विस्तरा ॥ दशा सकुन्तला च सव्गुण्या शठवपाँपहारिस्मी । स्मरपत्नीसमाराध्या स्मरारि गुलवायिमी ॥दशा सम्पूज्यवेयतारूपा सनकाविमुनिस्तुता । स्वभावचञ्चलापाङ्गी सन्धनवरप्रवा ।।दशी

THE RESIDENCE OF THE PARTY OF T

साष्ट्राङ्ग नमनत्रीता सम्मीलन परायणा । शान्तोदरी ।स्वयंधामा शरणागतवस्यला ॥ होभावती शुभाकारा शङ्कररीर्घशारिगी । श्रोगा शुभ्रजला सुश्च शरसन्धानकारिगी ॥ शरावती शरानन्दा शरज्ज्योत्स्ना शुभानना । शलमा शुलिनी श्रोता सुनम्ना शुक्लवाइना ॥ मुभ् बारिष्यहवा पड्ऋतुभ पडानना । पडाधारस्थिता शस्ना पडांजा परामुखित्या ॥ सन्यासभारिणी सैन्या सुधन्या सुष्टुगोचरा । पडङ्गरूपसुरता सुरासुर नमस्कृता ॥ सर्ववासा सदोन्मत्ता सुस्तनी सागराम्बरा । सुन्यवस्था च सुरभिः सूर्यमग्डलमध्यगा ॥ सत्या सत्पजिह्वामवासिनी । सहस्रद्वयजिह्याम शेपपर्यंक्कशायिनी ॥ सत्यार्चिमग्डलगता सन्या सूर्यविभूपगा । सारिका श्यामला स्मेरा स्मेरवक्त्रा शुक्रिया ॥ ब्रुकाष्ययन सम्पन्ना शुकी शुक्रवरिया । शुक्राचार्य ;िप्रयाऽशोका शोकप्रन्तापहारिगी ॥ स्वर्गमोत्त्रसुखद्वारा सर्वकामसुखप्रदा । सप्तद्वीपात्मकाधारा सप्तसागरघारिग्री ॥ सर्वपर्वाच पर्वाप्रा सप्तर्चि सुरसेविता । सद्योजीवा सर्वसन्ध्या सर्वलोकसमाश्रया ॥ मुधावन्त्रा सौमनस्या सम्भूता सुकृतालया । सर्वा सर्वजगत्यूज्या सर्वद्वन्दविनाशिनी ॥ सर्वमन्त्रमयी सुरा । सुधासम्मृष्टसर्वाङ्गी सुधापङ्कजमालिनी ॥ संसारपाशविक्रिन्ना सुनन्तत्रा सौरी केशीस्त्रलङ्कृता । सर्वदेवसमुत्पन्ना सर्वदेवमयीश्वरी ॥ संक्रमा संक्रमिया । सर्वपौरुपवरली च सर्वधमधिकारिका। सप्तकोटीश्वरी विद्या संसारार्ण्यतारिगी । श्रीकगठा शितिकगठा च सुधाधाराम्बुवर्षिगी ॥ ममुत्तीर्णा शक्तिरूपा सुशक्तिश्र सुधावती । सकलाख्यानसन्तुष्टा सोमसूर्याग्निमध्यगा ॥ बनम्बता सूचमरूपा सुसूत्रा सूत्ररूपिणी । सहस्रादित्यसंकाशा सहस्रनयनोज्यला ॥ सहस्रमुला सहस्त्रेशो सर्वविष्नविनाशिनी । सर्ववादित्र हस्ता च सर्वप्रहरणोद्यता ॥ सुर्गी सौरमेयी च सुभाधारा सुधावहा । सर्ववन्धन संदोत्री सर्वाभिचारनाशिनी ॥ सर्वासिद्धि महापाया सर्ववार्थकसाधिका । सर्वसंमामजनी सर्वशत्रुविनाशिनी॥ सर्वेश्वर्यसमुत्यत्तिः सर्वलोक्षेकदीयिका । सर्वालोक सुखोत्यका सर्वतः सुखदायिनी ॥ ^{सर्वे}दुःखान्त इत्स्मी सुमद्रा सर्वसात्त्रिका । सहस्रशाखाफिलनी सर्वरोगनिष्दिनी ॥ मुद्रा शत्रुहन्त्री शत्रुनामनिकन्दिनी । सकलंहा स्वरूपस्या सोऽहं शब्दस्वरूपिणी ॥ श्रीमन्त्रराजसङ्गा श्रीशैलपदगामिनी । श्रीचकराजनिलया श्रीमत्त्रिपुर सुन्दरी ॥ मुत्रासिन्यर्चनत्रीता सुकुमार त्रियक्करी । सदोन्मचा सदातुष्टा शर्मदा शम्धनेहिनी ॥

स्वस्था स्वभावमधुरा सदाशिवकुदुम्बिनी । सच्यापसच्यमार्गस्था सच्यसात्री सहायिनी ॥ ११०॥ सुदिचिया सुकौमारी सुमेना च सुरिम्भका। सर्वोपनिषद् स्तुत्या समीरतनयस्तुता ॥ १११ सत्यज्ञानानन्दरूपासामरस्य परायगा । सर्वोपाधि विनिर्मकाः सदाशिव पतित्रता ॥ ११२॥ ्रशक्ति सर्वमा सर्वमोहिनी । उन्हार सर्वाधारा सप्रतिष्ठा सदसद्र प्रधारिगी ॥ ११३॥ सर्ववेदान्त संवेद्याः सत्यानन्द स्वरूपिगा । गुभाचारा समावाणी सवीदिच्चिण विराजिता ॥ ११४॥ सर्वादने प्रीतचित्रा सिन्द्र तिलकाङ्किता । सहस्रदलमध्यस्था सर्ववर्णोपशोभिता ॥ ११५॥ सर्वायुधधरा शुका संस्थिता सर्वतोमुखी । स्वाहा स्वधा सहस्रारा सर्वमृत्युनिवारिको ॥ ११६॥ सश्लाघायुधसम्पन्ना स्वाधिष्टोम्बुज संस्थिता । समस्त भक्तसुखदा शाकिन्येवास्वरूपिणी 1) ११७। शिवदृती शिवाराध्या शिष्टेष्टा शिष्ट रूजिता । ात अन्ति ।। ११८। स्वात्मानन्दलयोस्रह्माः अध्याहादनचन्द्रिका भे विकास विकास विकास सद्यःप्रसादिनी साची साचिक्ती साचिवर्जिता ॥ ११६ श्रुतिसीमन्तिसन्द्री सदाशिवगृहिस्थता ॥ १२० सकलागम सन्दोहा शुक्तिसम्पुट मौक्तिका । सहस्रवदनप्रीता सर्वश्रम निवारिणी॥ १२१ सत्यप्राज्ञापिका सत्या सर्वाबस्थाविवर्जिता । ा संहारिणी सृष्टिरूपा सृष्टिकत्री शिवालया ॥ १२१

'सहर ही' वीजरूपातमा 'सौं' वीजनिलयात्मिका । 'सहौं' वीजसुसर्वाङ्गी सम्मोहन ऋषित्रिया ॥ सकतं 'हों' महाविद्या शुक्राचार्य हृदिस्थिता । सान्तमौलैकवीजस्था सच्छ्रसमुपाश्चिता ॥ सदसद्रामनिजया शतरुरा शतानना । श्रीरामद्भयानन्द दशधानन विघातिनी ॥ क्वींबीजा श्रींबीजा श्रीं श्रीं श्रीं श्रीनिकेतना । स्वरन्यास स्वरूपस्था शुक्रान्ता शुक्रतर्पणा ॥ सुकपू रिनभासात्मा शुभस्थल निवासिनी । संध्यामरूपिणी संध्या संहिता संहितात्मना ॥ संनासमेदोस्थिगता सुकुत्ता सुहृदिस्थिता । फिसुलो च भासौफासकौँ समदलारिमका ॥ सक्रीं हंस स्वरूपस्था स क्लौं विहगरूपिणी । सुवर्णी वर्ण सर्वाङ्गी ख्रींरूपा शास्त्रशालिनी ॥ सक्रमान्यासवेणी च स्वामिनी शिवपोषिणी । श्वेतातपत्रधरिणी सिद्धार्थी शीलभूपणा ॥ सत्यार्थिनी सन्ध्यामा च शची सिही संहंकरी । संकोचार्थ प्रदर्शी च सहदवन्धुविहारिगी ॥ शिपिविष्ट प्रियाश्लोका सुकामा सज्जनाश्रया । सूचमेलवरघुरुयां स्थारलौरूपधारिगाी ॥ शिवशक्तिसमाश्लिष्टा स्फुरद्व्योमान्तरस्थिता । सर्वरोगहराख्या च सौरमा चौर संस्तुता ॥ सम्पुटब्रह्मभध्यस्था सर्वसम्पुट मालिका । सर्वाशापूरणीश्लाध्या श्लींबीजा श्लींपराशिला ॥ शिलास्वरूपतरणी शुक्लाङ्गी शुक्लभाषिणी । सदा शृङ्गनिवासी च सावर्णीतनयस्तुता ॥ मुरथ्या सुरथारूढा सुरथ ज्ञानदायिनी । स्रौबीजवासिनी श्रांता श्रान्तसन्तापहारिएते ॥ श्मशानकाली सा गुह्मा श्मशानागार भूपरा। शास्त्रिया शक्तिकला शास्ता शस्तिपरावणा।। सिखवृन्दिनवासा च सिखिगोष्ठी प्रियंकरी । शुभभोगाद्यसन्तुष्टा सर्वज्ञानाक्षमालिनी ॥ श्वेतद्वीपनिवासा च शुभ्रजाम्बूनदस्थिता । समाश्लेषातुरात्मा च सिवद्युत्ते जरूपिग्री ॥ साकारनिलया साका साकेतपुरवासिनी । सप्तब्याहृतिसंयुक्ता स्नुषा सुध्यक्तमालिका ॥ साम्बालया साम्बरूपा सुनागमिशाभूषरा। सुजटा सौकला सौख्या सर्पमालिबभूषणा॥ संहार भेरवस्तुत्या स्मातंहोमप्रियंकरी । सर्विप्रिया समृद्धा सा सद्वैद्यभिषजप्रिया ॥ सौराष्ट्रदेशमध्यस्था सोमनाथेश्वराङ्क्ष्णा । स्वयंवरोत्सवप्रीता सौमित्रिप्रियभाषिग्री ॥ शक्तिसङ्गमसन्तुष्टा शरत्ताराङ्गग्रास्थिता । सप्ताश्वरथसंस्था च श्वेतकुञ्जरवाहिनी ॥ थीमद्वेमयती श्वासा सुकुमारी सुकन्यका । श्रीसागानन्ददमना श्रीमज्जनकनन्दिनी ॥ सदाद्वेतस्वरूपा च मुकर्णा च सुकुण्डला । संगाषकारियाी श्वासा चातुरी शान्तरोहियाी ॥ सरावती सरोन्मादा सरावण निकन्दिनी । सहस्राननधाती च सपट्टिशकरायुधा ॥ संकों कालि स्वरूपस्था सल्हों भेवस्बरूपिण्डि। संग्ली पञ्चास्त्ररूपस्था सध्वं पञ्चस्वरूपिण्डि॥

पञ्चमुद्राधिगता सच्छीत्रज्ञ मधुव्रता । सनातन प्रेतसंस्था स पञ्चापृत मिन्नगी सकौतिक गृहान्तस्था सवामा च सदिचागा । स पश्चवागाच्यथिता सदादेव प्रसादिनी सघना च सुगन्धा च सतिडित्कान्ति सिन्नभा । सर्वकालमयी रूपा सिन्नमा शील लंघना ॥ सेन्द्रायुध सगुत्कग्ठा मुराचार्यवरप्रदा । सुगन्धवरली कान्तस्था समुद्या सान्द्रमालिका ॥ सल्यज्योति स्वरूपस्या सजुहोमित भाषिगी । शुनिसेफः ऋषिस्तुत्या श्वेतवर्णा समुज्वला ॥ श्रीकृष्णाङ्क निवासिनी शुभगा शुभमङ्गला । स्नानोदकप्रिया स्नाता समुद्रा सिन्धुवासिनी ॥ सच्छित्य बोधिनी शिष्या शतजन्मा शताकृतिः । सद्धनाश्रित पादाव्जा सदानन्दविहारिगी ॥ सर्वतीर्थाऽवगाहिनी संचोमन सच्चक्रका । श्री ही की मैरवीसाद्या श्री की ही हूं समन्विता। समुत्पन्ना शङ्करोत्पत्तिकारिग्गी । शत्रुनाशा शत्रुदाता शत्रुनाशनतत्परा ॥ श्रीं हीं श्री शुक्लभेरवी शुं शुं शक्तिस्वरूपिणी । शालाची शालरूपा च शालपानपरायणा॥ शूं शुं शुं गतिस्वरूपिणी सकाराच्चरभुपिता । शीघरूपा च शीघा च शीघतत्त्वविमोहिनी ॥ शुकराकृतिलाल ा । शत्रोरशनसन्तुष्टा शैलस्नेह शुकरेज्या शान्तिस्तोत्र शमीपूजारतप्रीता परायग्री । शववाहनसन्तुष्टा शवरूपा ं शवेश्वरी॥ श्रीमद्भूषा च सद्वाला शेषचण्डपरायराा । श्रीगुराा श्रीशरन्माया शारदानन्दकारिरगी॥ श्रीपावंति शक्तिमेधा श्रीकमला च सुगर्भिग्गी। शीतोष्मसम दुःखद्नी शिवमुद्रा प्रदर्शिनी॥ सुकाली सुतारा च सुछिन्ना च सुसुन्दरी । श्रीमद्भुवनेश्वरी च श्री श्रीमाया च सुिक्षिदा॥ श्रीबगला श्रोघूमा श्रीमहालक्ष्मी च शालिका । स्वकीयार्चनसन्तुष्टा शिवावलिप्रियात्मिका॥ सुरम्या चित्रक्टस्था सुदर्शनसहाधिनो । सभयाऽभीष्ट वरदा सक्रोधा सभयद्भरी॥ सुधीवादि हरिस्तुत्या सुद्धुग्रीवा सुसागरा । सप्तपातालचरएा सप्तालप्रभेदिनी ॥ शुम्भासुरिक्जिन्तिनी । शुद्धस्फर्टिकसंकाशा सुताम्बूलधरित्रया ॥ सुरक्तम शिभूषाङ्गी सुसर्वज्ञा सर्वशिवत सर्वेशवयंप्रदायिको । सर्वाश्रीशाङ्करी सर्वोन्मादिको च महांकुशा॥ सां सी सर्वाशपूरराी अँ अँ श्रीचक्रस्वामिनी। शापानुग्रहसामध्या स्वचकायुघ रिक्गी। सगरात्मजसन्दग्धा शुक्रकर्त्रो च सप्तमी । संगत्सरित्रया षष्ठी सत्यगृहस्वरूपिग्।। सुसस्य सरितस्नाता सरितानांशिरोमणिः । सहजानन्दलहरी सुभोजन प्रीतिचित्ता वड्रसस्वादनप्रिया । सौधात्मिका सौधरूपा सुसौधा सेन्धवप्रिया ॥ शोधना शोधकृत् सौधा शोधनिप्रयमानसा । सुदृहिट अत्र सुलज्जा च सुश्रुनासा समौतिका ।

मुवाद्रमद्दर्पद्यी स्पंडिती स्पंडित्ता । सर्वप्रयोगक्रमला सर्वस्तम्मनकारिमी ॥१७५॥ शुक्ष्पालन सन्तुष्टा शुक्ष्येपा शुक्षुप्रया । सुद्रामादुःखसंहर्त्री सुमद्राभोकनाशिनी ॥१७६॥ शृक्ष्पप्रतिक्षापहृता सहवेषप्रियङ्कररी । शक्ति कल्यामादात्री च शक्तवेरी विनाशिनी ॥१७०॥ श्रीकृष्यीजसहिता शशिविष्टनविनाशिनी । श्री क्ली विष्टाविनाशिन्ये शन्सुभोग परायमा ॥ सम्पूर्णनन्द्रवद्दा शोकमार्गविनाशिनी । शत्रृच्चाटनमार्गस्था शत्रुमोहनकारिमी ॥१७६॥ शृक्षिवादनसन्तुष्टा सारात्सारतरास्मृता । सारस्वतमुनिस्तुल्या साधिताऽखिल वेभवा ॥१८०॥ सुप्रविता सुवेलाद्विनमीपा सर्वकामिनी । सर्वभ्रतान्तिनरता श्लोकतन्त्रार्थद्शिनी ॥१८०॥ संजयप्रियकर्त्री च सुप्रोधनवधोद्यता । सर्वभ्रतान्तिनरता श्लोकतन्त्रार्थद्शिनी ॥१८०॥ संजयप्रियकर्त्री च सुप्रोधनवधोद्यता । सर्वभ्रतप्तिस्स्तुत्या सात्त्रिकी सर्वरिच्नि ॥१८०॥ सामीप्यफलदायी च सारूप्रविन्तिभोगिनी । सालोक्यफलसिद्धयर्था सायुज्यपददायिनी ॥१८०॥ सामीप्यफलदायी च सारूप्रविन्ति । सालोक्यफलसिद्धर्या सायुज्यपददायिनी ॥१८०॥

अथफल श्रुतिः—

1

इति ते कथितं देवि ! दिव्यनामसहस्रकप् । सीतादेव्याः परं गुद्धं महापातकनाशनम् ॥१८८॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां संक्रान्तौ मङ्गलेदिने । अमायां च तथा रात्रौ नवम्यां च शुभेदिने ॥१८५॥ पूजाकाले व्यतीपाते सन्ध्ययोरुभयोरि । यः पठेद् पाठयेद् वािष शृगोति आत्रयेदि ॥१८६॥ लभते गागापत्यं सः यः पठेत् साधकोत्तमः । सर्वपायविनिर्मुक्तः सयाति परमांगतिम् ॥१८८॥ अद्ध्याऽश्रद्धया वािष यः कश्चिन्मानतः पठेत् । दुगिति तरते धोरां सयाति विष्णुपन्दिरम् ॥१८८॥ यन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृत्वत्सा च याङ्गना । स्तुत्वा स्तोत्रमिदं पुत्राँख्लभते चिर्जीविनः ॥ यं यं चिन्तयते काभी पठेतस्तोत्रमनुत्तमम् । क्षीता वर्णसादेन तं तं प्राप्तोति मानवः ॥१६१॥ पञ्चोपचारे नैवेद्यं बिलिभिर्वहुरोाभितः । श्वय दीर्पमहादे ते पूजियत्वा मनोरमे ॥१६२॥ पद्धत्तरं महामन्त्रं यद्वा लच्च पठेतसुधी । अनन्यचेता स्थिरधीर्वशुद्धासन संस्थितः ॥१६३॥ वायुतुल्य वले। लेकि दुर्जयः शत्रुमर्दनः । सर्वविद्यावतां श्रोष्ठो धनेन च धनाधिपः ॥१६४॥ सर्वसंकटमुत्तीर्गः सर्वसिद्धिसमन्वतः । श्रोसीतौत्कृष्टदेव्याश्च सेव्यमानौस्करोपमः ॥१६४॥ सर्वसंकटमुत्तीर्गः सर्वसिद्धिसमन्वतः । श्रोसीतौत्कृष्टदेव्याश्च सेव्यमानौस्करोपमः ॥१६४॥

हे देवि ! यह श्रीकीता देवी का गुप्त तथा महापातक नष्ट करने वाला सहस्रनाम सोत्र मैं ने तुमसे कहा है, अष्टमी को-चतुर्दशी-संक्रान्ति-मङ्गलवार-श्रमावस को तथा नवमी के ग्रुभ दिन में रात्रि में पवित्र होकर पाठ करे अथवा व्यतीपात के दिन तथा प्रातः साथ संध्याकाल में जो पढ़ता है-पढ़ाता है-सुनता है-सुनाता है, वह श्रेष्ठ साथक सभी पापों से मुक्त होकर परमगित को प्राप्त करता है। श्रद्धा से अश्रद्धा से को कोई मानव इसका पाठ करे तो

वह घोर दुर्गित से तरकर प्रमु के वंकुण्ठ में जाता है वन्ध्या (जिसको कभी सन्तान हुआ हो) काक बन्ध्या (जिसके एकवार सन्तान होकर फिर वन्ध्या हो गई हो) मृतक्ष्मा (जिसके सन्तान मर जाते हों) ऐसी स्त्रियां इस स्तोत्र का पवित्र श्रीवेष्ण्य विप्र के मुस हे श्रवण्य करके उसकी प्रसंसा करे अथवा स्वयं पाठ करे तो उसकी चिरंजीवी पुत्र प्राप्त होता है। जिस जिस वस्तु की कामना से इस सर्वोत्तम स्तोत्र का पाठ किया जाय वह सव वस्तु मनुष्य श्री सीता जी की प्रसन्तता से प्राप्त करता है। पद्योगचार पूजन करके श्रीसीता देवी को बहुत सुन्दर खूब नैवेद्य भोग धरावे। धूप-दीप-पंक्यात्र समर्पण्य श्रीफल बिल आदि मनोइर पदार्थों से महादेवी की पूजा कर उनके वडचर मूल मन्त्र का सुधी भक्त साधक एक लाख जप करे। अनन्य निष्टा से एक आसन से विशुद्ध भावना से जो यह अनुष्टान करे तो वह पयन के समान बलवान होता है, शत्रुओं का मर्दन करता है, उसको कोई जीत नहीं सकता है, विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ बनता है, धनवानों में कुबेर तुल्य हो जाता है। श्रेष्ठ संकटों को पार कर सर्व सिद्धियों से सम्यत्र हो जाता है, सर्वोत्कृष्ट श्रीसीता देवी का उपासक सौन्दर्य में कामदेव के समान हो जाता है। एकोक १८४ से १६५)

महेशबद्रयोगीन्द्रः भूतैःसह प्रपूजितः । कामतुल्यस्वरूपोऽसौ सर्वाकर्षण्कारकः ॥ सूर्येन्दुजलवायूनां स्तम्भको राजवल्लभः । यशस्वी सत्कविर्धीमान् समन्त्री कोकिलस्वरः ॥ बहुपुत्रो जगत्स्वामो नरेशोधार्मिकः सुर्खी । मार्कंण्डेय इवायुष्मान् जरापिलतर्वाजतः ॥ नवयौवनयुक्तः स्यादिवर्षमहस्रभाक् । बहु कि कथनात्तस्य पठेत्स्तवमनुत्तनम् ॥ न किश्चिद् दुलंभंलोके यद्यद्मनसि वर्तते । तत्सर्वे स्वल्पकालेन भविष्यति वरानने ॥ सुरापानं बह्महत्या स्तेयं गुवंङ्गनागमः । सर्वमाश्चतरत्येव स्तवस्यास्यप्रसादतः ॥ स्तवेनानेनसंस्तुत्वा साधकः किन्नसाधयेत् । मूलमष्टोत्तरं जप्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ॥

वह महेश्वर के समान भूतेण्वरों से पूजित योगीन्द्र पद प्राप्त करता है, काम के समान स्वरूपवान् होकर सभी का आर्कपण कर सकता है. सूर्य-जल तथा पवन के अनिष्ठ प्रभाव को रोक सकता है. वह यणस्वी-सल्किय-बुद्धिमान-मन्त्रज्ञ-विचारक-निर्णायक-नरेश-धार्मिक-मुली प्रजा का स्वामी-तथा पुत्र-पौत्रवान् होता है. बुद्धावस्था तथा रोग रहित स्वस्थ रहता है. मार्क खंडेय के समान दीर्घायु होता है, हजारों वर्ष नव यौवन सम्पन्न रह सकता है. बहुत क्या कर्ह जो इस सर्वोत्तम स्तोत्र का पाठ करता है उसको संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। हे मुन्दर श्रेष्ठ मुख वात्री पावंदी ! वह जो मन में इच्छा करता है वह शीघ्र ही अनायास प्राप्त करता है । श्रुक्षहत्था-मुरापान-गुरुपरनी गमन जैसे महापापों से वह इस स्तोत्र पाठ की कृपा से शीच का अष्टोत्तरशत १०६ जप करके तब इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। (श्लोक १९६ से २०३)

THE RESIDENCE OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY

दर्शनं च भवेदाशु देशगन्धर्यसेवितः । येन केन प्रकारेण सीतामिकः समन्वितः ॥२०३॥ स्तम्भयेदिखलान् कामान् राजानमिपमोहयेत् । परिनन्दा परद्रोह परवाद परायणः ॥२०४॥ खलाय परसन्त्राय अष्टाय च दुरात्मने । न देयं मिक्तिहीनाय शियद्रोहकराय च ॥२०४॥ रामभिक्ति विहीनाय परदारस्ताय च । जपप्जाविहीनाय द्विज स्त्री निन्दकाय च ॥२०६॥ न स्तवंदर्शयेद्दिव्यं दर्शनाच्छिवहाभयेत् । कुलीनाय सुशीलाय राममिक्त पराय च ॥२०७॥ वैष्णवाय विशुद्धाय भक्तेर्नकाय मिन्त्रगो । देथं सहस्रनामदमध्यमधक्तं लयेत् ॥२००॥ देव्यैनिवेदितं यत्—तत् तस्यांशं मच्चयेत्ररः । दिव्यदेहधरोभत्वा देव्याः पाश्वेचरोमयेत् ॥२००॥ नैवेदितं यत्—तत् तस्यांशं मच्चयेत्ररः । दिव्यदेहधरोभत्वा देव्याः पाश्वेचरोमयेत् ॥२००॥ नैवेदितं देव्यै दृष्टिवा स्तुत्वा च मानवम् । रक्तपानोधतासर्वा मासास्थिचर्मणोद्यताः ॥२१०॥ तस्यै निवेदितं दैव्यै दृष्टिवा स्तुत्वा च मानवम् । न निन्देन्मनसात्राचा सर्वव्याधिषराङ्मुखः ॥ यस्यालयेतिष्ठतिन्त्नमेतत् स्तोत्रं सुरम्यं लिखितं विधिन्नैः ।

गोरोचनालङ्कृत कुंकुमाक्तं कर्पुर सिन्द्र मदद्रवेन ॥२१२॥ न तत्र चौरस्य भयं न शत्रुतो न वाशने विक्षा न च्याधिभीतिः ।

> उत्पातवातरिपि नात्रशङ्का लच्मी स्त्रयं तत्र वसेदलोला ॥२१३॥ इति श्रीरुप्रयामले उमामहेश्वरसंवादे सकरादि श्रीसीतासहस्रनामस्तोत्रम्

> > N सम्बूर्णम् ॥

ही श्री जानकी जी का दर्शन प्राप्त कर देव-गन्धर्व पृजित हो जाता है। सभी कामनाओं को स्तिम्मत कर सकता है, राजाशों को मोहित करता है। दूमरों को व्यथं कलंक लगाने वाले परिनन्दक-परद्रोहो-परस्त्रीगामी शिव द्रोही-श्रीराम प्रेम रहित-पूजा पाठ भजन भाव से रहित-नित्य नियम मन्त्रानुष्ठान विशुख-साधु ब्राह्मण तथा रत्री निन्दक को यह स्तोत्र नहीं रहित-नित्य नियम मन्त्रानुष्ठान विशुख-साधु ब्राह्मण तथा रत्री निन्दक को यह स्तोत्र नहीं रिखाना चाहिये। ऐसे लोगों को यह दिखलाने वाला शिवजी की हत्या का भागी अथवा अपने दिखाना चाहिये। ऐसे लोगों को यह दिखलाने वाला शिवजी की हत्या का भागी अथवा अपने कियाण कार्य का घातक होंना है। जो कुलीन सत्कुलप्रसूत हो, सुशील ही, श्रीराम भिक्त पराक्ति हो, वंद्याल हो विशुद्ध सदाचारी हो, मन्त्रानुष्ठान परायण हो, ऐसे सुपात्र को यह असीता वण हो, वंद्याल हो विशुद्ध सदाचारी हो, मन्त्रानुष्ठान परायण हो, ऐसे सुपात्र को यह असीता जो को सहस्तनाम स्तोत्र प्रदान करेगा रसको अश्रमेघ यज्ञ करने का फल मिलेगा। श्री सीता जी को सहस्तनाम सतात्र प्रदान करेगा रसको अश्रमेघ यज्ञ करने का फल मिलेगा। श्री सीता जी को स्व दिव्य देहधारी वनकर श्री जू की नित्य सेवा प्राप्त सह-भोग लगाया प्रसाद जो खाता है वह दिव्य देहधारी वनकर श्री जू की नित्य सेवा प्राप्त सह-भोग लगाया प्रसाद जो खाता है। जो श्रीजानकीजी के नैवेद्य की निन्दा करता है बसका रक्त वर वनकर कृतार्थ हो जाता है। जो श्रीजानकीजी के नैवेद्य की निन्दा करता है बसका चाहते हैं। पान करने के लिये योगिनी गण नाचने कगते हैं। उसका मौस चमड़ा खींच लेना चाहते हैं। पान करने के लिये योगिनी गण नाचने कगते हैं। उसका मौस चमड़ा खींच लेना चाहते हैं। वाहिये, निन्दा तो भूल कर भी मन वचन से कभी नहीं करनी चाहिये। इस नियम को चाहिये, निन्दा तो भूल कर भी मन वचन से कभी नहीं करनी चाहिये। इस नियम को

पालन करने वाला सर्वं व्याधि से मुक्त होकर सदा सुखी रहता है। जिसके घर में कुर्व रम्य अन्तरों में लिखा हुआ यह स्तीन रहता है तथा विधि जानने वाला भक्तजन केनर-कार्व चन्दन-कार्य तथा सिन्द्र चहाकर नित्य पूजन करता रहता है, उसके घर में कभी चोर व भय नहीं होता है, न कोई शन्न का भय रहता है, विजली (वन्नपात) अग्नि कारह आहि उपन्तों का भय नहीं रहता है। उसका घर सर्वेपद्रव से रहित शंका भय मुक्त स्वयं श्रीबद्ध जी का अविचल निवास स्थान बन जाता है। (एलोक २०३ से २१३)

''यह श्रोरुद्रयामल तन्त्र का उमा महेश्वर संवादात्मक सकारादि ''श्रीसीता सहस्रनाः स्तोत्र'' सम्पूर्ण हुआ।